



यह लघु सरिता का बहता जल ।
कितना शीतल, कितना निर्मल,
हिमगिरि के हिम से निकल-निकल,
यह विमल दूध-सा हिम का जल,
कर-कर निनाद कल-कल, छल-छल,
तन का चंचल मन का विह्वल ।
यह लघु सरिता का बहता जल ॥

ऊँचे शिखरों से उतर-उतर,
गिर-गिर गिरि की चट्टानों पर,
कंकड़-कंकड़ पैदल चलकर,
दिन-भर, रजनी-भर, जीवन-भर,
धोता वसुधा का अंतस्तल ।
यह लघु सरिता का बहता जल ॥



हिम के पत्थर वे पिघल-पिघल,
बन गए धरा का वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकल,
पी-पीकर अंजलि भर मृदु जल,
नित जल कर भी कितना शीतल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।



कितना कोमल, कितना वत्सल,
रे जननी का वह अंतस्तल,
जिसका यह शीतल करुणा जल,
बहता रहता युग-युग अविरल,
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।

— गोपाल सिंह 'नेपाली'



चंपारन (बिहार) में जन्मे गोपाल सिंह 'नेपाली' (सन् 1913-1963) को प्रकृति से बहुत प्रेम था। इनकी रचनाओं में यह प्रकृति प्रेम स्पष्ट झलकता है। उमंग, पंछी, नीलिमा, सावन आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।



अभ्यास



शब्दार्थ

विमल	=	स्वच्छ, साफ	रजनी	=	रात
निनाद	=	ध्वनि, आवाज	वत्सल	=	पुत्रवत् स्नेह करने वाला
विह्वल	=	व्याकुल	अंतस्तल	=	हृदय
वसुधा	=	पृथ्वी	अविरल	=	निरंतर, लगातार

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए —

- (क) सरिता का जल कहाँ से आता है ?
(ख) सरिता का जल रात-दिन बहते हुए कौन-सा कार्य करता है ?



- (ग) पथिक सरिता के जल से किस प्रकार सुख पाता है ?
 (घ) कवि ने जननी के अंतस्तल को कोमल क्यों कहा है ?
 (ङ) सरिता के जल को 'तन का चंचल' क्यों कहा गया है ?

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

- (क) 'तन का चंचल मन का विहवल, यह लघु सरिता का बहता जल'
 (ख) 'दिन-भर, रजनी-भर, जीवन-भर, धोता वसुधा का अंतस्तल'
 (ग) 'नित जलकर भी कितना शीतल'
 (घ) 'बहता रहता युग-युग अविरल'

3. सोच-विचार : बताइए -

क्या कारण हैं - नदियों का जल उद्गम स्थल पर शुद्ध होता है जो आगे चलकर प्रदूषित हो जाता है ?

4. भाषा के रंग -

- (क) कल-कल, छल-छल समान ध्वनि के शब्द हैं जिनका एक साथ दोहरा प्रयोग हुआ है। इससे भाषा में सुंदरता बढ़ी है। कविता में आए इस प्रकार के अन्य शब्द लिखिए।
 (ख) कविता की पंक्तियों के अंत में समान तुक वाले शब्द आए हैं जैसे, विकल - निकल, जल-छल। इसी प्रकार समान तुक वाले शब्दों के जोड़े बनाइए।
 (ग) कविता में सरिता के जल के लिए अनेक विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे - शीतल, निर्मल आदि। ऐसे ही पाँच और विशेषण शब्दों को कविता से ढूँढ़कर लिखिए।
 (घ) दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -
 सरिता - नदी, तरंगिणी पर्वत -
 जल - वसुधा -

5. अनुमान और कल्पना

यदि नदियों का जल सूख जाए तो क्या होगा ?

6. तुम्हारी कलम से

'जल ही जीवन है।' इस कथन के संबंध में अपने विचारों को दस पंक्तियों में लिखिए।

7. अब करने की बारी

- (क) कविता का अभ्यास कर प्रभावपूर्ण ढंग से कक्षा में सुनाइए।
 (ख) पहाड़ से निकलती हुई नदी का चित्र बनाइए।
 (ग) अपने क्षेत्र में बहने वाली नदियों के नाम लिखिए।

